INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: IX	Department: Hindi	Date of submission: NA
Question Bank: 14	**Topic: कल्लू कुम्हार की उनाकोटी**	Note: Pl. file in portfolio

कहानी- कल्लू कुम्हार की उनाकोटी - लेखक: के. विक्रम सिंह

प्रश्न- {1} 'उनाकोटी' का अर्थ स्पष्ट करते हुए बतलाएँ कि यह स्थान इस नाम से क्यों प्रसिद्ध है ?

उत्तर: 'उनाकोटी का अर्थ है एक कोटि, अर्थात् एक करोड़ से एक कम। दंत कथा के अनुसार उनाकोटी में शिव की एक कोटि से एक कम मूर्तियाँ हैं। शिव की इन मूर्तियों की वजह से ही इस स्थान का नाम उनाकोटी प्रसिद्ध है।

प्रश्न- {2} पाठ के संदर्भ में उनाकोटी में स्थित गंगावतरण की कथा को अपने शब्दों में लिखिए ।

उत्तर: यह तो सभी ने सुना ही है कि गंगा को भागीरथ लेकर आए थे । इसी मिथक के अनुसार गंगावतरण के धक्के से कहीं पृथ्वी धँसकर पाताल लोक में न चली जाए, लिहाजा पृथ्वी को बचाने के लिए देवताओं ने शिव को तैयार किया और उनसे कहा कि वे गंगा को अपनी जटाओं में उलझा लें और फिर धीरे-धीरे पृथ्वी पर बहने दें ।

प्रश्न- {3} कल्लू कुम्हार का नाम उनाकोटी से किस प्रकार जुड़ गया ?

उत्तर: कहा जाता है कि वह पार्वती का भक्त था और शिव-पार्वती के साथ उनके निवास कैलाश जाना चाहता था । पार्वती के ज़ोर देने पर शिव कल्लू को कैलाश ले चलने को तैयार हो गए । लेकिन इसके लिए शर्त रखी कि उसे एक रात में शिव की एक कोटि {करोड़} मूर्तियाँ बनानी होंगी । कल्लू अपनी धुन के पक्के व्यक्ति की तरह इस काम में जुट गया । लेकिन जब भोर हुई तो मूर्तियाँ एक कोटि से एक कम निकलीं । तभी से कल्लू कुम्हार का नाम इन मूर्तियों से जुड़ गया ।

प्रश्न- {4} 'मेरी रीढ़ में एक झुरझुरी-सी दौड़ गई'- लेखक के इस कथन के पीछे कौन-सी घटना जुड़ी है ?

उत्तर: जब लेखक सी.आर.पी.एफ़. की सुरक्षा में शूटिंग के लिए मनु की यात्रा पर जा रहा था, तब रास्ते में एक जवान ने निचली पहाड़ियों की ओर रखे दो पत्थरों की तरफ इशारा करके दिखाया कि दो दिन पहले हमारा एक जवान यहीं विद्रोहियों द्वारा मार डाला गया था । यह सुनकर लेखक की रीढ़ में एक झुरझुरी-सी दौड़ गई ।

प्रश्न- {5} त्रिपुरा 'बहुधार्मिक समाज' का उदाहरण कैसे बना ?

उत्तर: त्रिपुरा में संसार के चारों बड़े धर्मों के लोग; जैसे- हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और बौध रहते हैं । इसलिए यह बहुधार्मिक समाज का उदाहरण बन गया।

प्रश्न- {6} टीलियामुरा कस्बे में लेखक का परिचय किन दो प्रमुख हस्तियों से हुआ ? समाज-कल्याण के कार्यों में उनका क्या योगदान था ?

उत्तर: टीलियामुरा कस्बे में लेखक का पहला परिचय हुआ हेमंत कुमार जमातिया से जो एक प्रसिद्ध लोकगायक हैं । जवानी में वे पीपुल्स लिबरेशन ओर्गेनाइजेशन के कार्यकर्ता थे लेकिन जब उनसे लेखक की मुलाकात हुई तब वे हथियारबंद संघर्ष का रास्ता छोड़ जिला परिषद के सदस्य बन गए थे । दूसरी मुलाक़ात हुई गायक मंजू ऋषिदास से । वे रेडियो कलाकार के साथ-साथ नगर पंचायत में अपने वार्ड का प्रतिनिधित्व करती थीं । वे निरक्षर थीं, लेकिन नगर पंचायत को वे अपने वार्ड में नल का पानी पहुँचाने और इसकी मुख्य गलियों में ईंट बिछाने के लिए राज़ी कर चुकी थीं ।

प्रश्न- {7} कैलासशहर के जिलाधिकारी ने आलू की खेती के विषय में लेखक को क्या जानकारी दी ?

उत्तर: उन्होंने लेखक को बताया कि टी.पी.एस. की खेती को त्रिपुरा में किस तरह सफलता मिली । आलू की बुआई के लिए आम तौर पर पारंपरिक आलू के बीजों की ज़रुरत दो मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर पड़ती है । इसके बदले टी.पी.एस. की सिर्फ 100 ग्राम मात्रा ही एक हेक्टेयर की बुआई के लिए काफी होती है । त्रिपुरा से इसका निर्यात अब न सिर्फ अपने देश में बल्कि बांग्लादेश, मलेशिया और वियतनाम को भी किया जा रहा है ।

प्रश्न- {8} त्रिपुरा के घरेलू उद्योगों पर प्रकाश डालते हुए अपनी जानकारी के कुछ अन्य घरेलू उद्योगों के विषय में बताइए ।

उत्तर: त्रिपुरा के घरेलू उद्योग में बाँस का महत्त्वपूर्ण स्थान है । अनेक उद्योग बाँस पर आधारित हैं । यहाँ पर टी.पी.एस. आलू के उत्पादन को भी बढ़ावा दिया जा रहा है । बुनाई, फर्नीचर बनाना, कृषि औज़ार, चाय उत्पादन, खाद उत्पादन आदि अनेक घरेलू उद्योग हो सकते हैं ।

<u>अन्य परीक्षोपयोगी अन्य प्रश्न -</u>

प्रश्न- {9} 'कल्लू कुम्हार की उनाकोटी' पाठ के प्रथम अनुच्छेद में सुबह की सैर का वर्णन किया गया है । एक विद्यार्थी के व्यक्तित्व के विकास में सुबह की सैर का क्या महत्त्व है ?

उत्तर : विद्यार्थी के व्यक्तित्व विकास में सुबह की सैर का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है । प्राकृतिक सौन्दर्य का आनंद प्राप्त करने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है । प्राकृतिक सौन्दर्य का रस प्राप्त करने के साथ-साथ सुबह की सैर से स्वास्थ्य भी ठीक रहता है । एक अच्छे व्यक्तित्व के

विकास में स्वास्थ्य का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है | सुबह की सैर करने वाले व्यक्ति आलसी या अकर्मण्य नहीं होते सुबह की किरणें एवं ताज़ी हवाएँ व्यक्ति में नव-स्फूर्ति भर देती हैं। ऐसे व्यक्ति अपने सभी कार्य समय पर करने में समर्थ होते हैं।

प्रश्न- {10} "मैं जगा एक ऐसी कानफाडू आवाज़ से, जो तोप दगने एवं बम फटने जैसे थी, गोया जॉर्ज डब्लू वुश और सद्दाम हुसैन की मेहरवानी से तीसरे विश्वयुद्ध की शुरूआत हो चुकी हो।" आपके विचार से युद्ध कितना आवयश्क है? इसके क्या परिणाम हो सकते हैं?

उत्तर : मेरे विचार से युद्ध किसी भी दृष्टिकोण से आवयश्क नहीं है । किसी भी मसले पर आपसी बातचीत एवं सामंजस्य द्वारा युद्ध की विभीषिका को टाला जाना ही श्रेयस्कर है, क्योंकि युद्ध में हजारों लोग मारे जाते हैं । आर्थिक गतिविधियाँ रुक जाती हैं, आर्थिक हानि अत्यधिक होती है, सामाजिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाती है तथा पारस्परिक सहयोग के स्थान पर कटुता बढ़ती है, जो किसी स्तर पर किसी भी दृष्टिकोण से उचित नहीं है ।

प्रश्न- {11} "बांग्लादेश से लोगों की अवैध आवक यहाँ ज़बरदस्त है और इसे यहाँ सामाजिक स्वीकृति भी हासिल है ।" उपर्युक्त पंक्तियों में घुसपैठ का ज़िक्र किया गया है | आपके विचार से किसी भी देश में अवैध घुसपैठ उचित है ? तर्क सहित उत्तर दीजिए ।

उत्तर : नहीं, मेरे विचार से किसी भी दृष्टिकोण से किसी भी सीमा का उल्लंघन अच्छा नहीं है । किसी भी सीमा में घुसपैठ उस देश की आंतरिक सुरक्षा में सेंध है । इससे उस देश की अर्थव्यवस्था, रीति-रिवाज़ तथा सांस्कृतिक मूल्यों को खतरा बढ़ जाता है । जनसंख्या में अनावश्यक वृद्धि होती है जिससे वहाँ की सामाजिक व्यवस्था भी छिन्न-भिन्न हो जाती है । त्रिपुरा में बांग्लादेशियों की घुसपैठ वहाँ के मूल निवासियों के असंतोष का मुख्य कारण है, क्योंकि बाहरी लोगों ने जनससंख्या संतुलन को स्थानीय लोगों के खिलाफ ला खड़ा किया है ।

प्रश्न- {12} " त्रिपुरा में लगातार बाहरी लोगों के आगमन से कुछ समस्याएँ तो पैदा हुई हैं लेकिन इसके चलते यह राज्य बहुत धार्मिक समाज का उदहारण भी बना है ।" बहु धार्मिक समाज से क्या अभिप्राय है ? इससे आप किन मूल्यों का निष्कर्ष निकाल सकते हैं ?

उत्तर : बहु-धार्मिक समाज का अर्थ समाज में सभी धर्मों के अनुयायियों का सम्मिलित होना है । बहु-धार्मिक समाज हमें एकता के अमूल्य सूत्र में बाँधता है । हम एक दूसरे के धर्म की मर्यादा जान लेते हैं तथा उनका सम्मान करना भी सीख लेते हैं । ऐसा समाज हमें सद्भावना, आपसी विश्वास, सहृदयता, एक दूसरे के प्रति संवदेनशीलता तथा भाईचारे की भावना विकसित करने का विस्तृत फलक उपलब्ध कराता है । एकता एक ऐसी भावना है जो किसी भी समाज, परिवार तथा राष्ट्र के विकास में अमूल्य योगदान देती है ।

प्रश्न- {13} मंजू ऋषिदास रेडियो कलाकार के अतिरिक्त, वार्ड आयुक्त तथा सफल गृहिणी भी थी । परिश्रम के बल पर व्यक्ति कठिन से कठिन कार्य भी सहजता से कर देता है । इस कथन के समर्थन में अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

उत्तर : परिश्रम सफलता का मूलमंत्र है । जो श्रम का महत्त्व समझ जाता है उसके स्पर्श मात्र से कठिन से कठिन कार्य पलभर में पूरा हो जाता है । अतः किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए परिश्रम आवश्यक है । बिना परिश्रम के कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता । महेनत कर विशेष रूप से मन लगाकर किया जाने वाला मानसिक या शारीरिक श्रम परिश्रम कहलाता है । सृष्टि की रचना से लेकर आज की विकसित सभ्यता मानव परिश्रम का फल है। जीवन की इस दौड़ में परिश्रम करनेवाला ही विजयी होता है । मंजू ऋषिदास ने अथक परिश्रम करके ही समाज में मुकाम हासिल किया था । प्रश्नोक्त पंक्ति में कही गई बात अक्षरशः सत्य है ।

प्रश्न- {14} त्रिपुरा में हिंसा के लिए कौन उत्तरदायी है ? इस समस्या के निदान के लिए युवा पीढ़ी को किस प्रकार की जागरूकता की आवश्यकता है ?

उत्तर : त्रिपुरा में हिंसा के लिए मनुष्य का स्वार्थ ही उत्तरदायी है । आज का मनुष्य स्वार्थ सिद्धि के लिए कुछ भी कर सकता है । समाज में जितनी भी कुरीतियाँ फैली हुई हैं उन सबके पीछे मनुष्य का स्वार्थ है । हिंसा का जन्म भय, घृणा, अनिश्चितता तथा मानव जीवन के प्रति उपेक्षा से होता है । हिंसक के लिए हिंसा ही सब कुछ है । उसकी दृष्टि में समय का कोई मापदंड या नैतिक आधार नहीं होता । संगठित हिंसा ही आतंकवाद है । हमें समाज को हिंसा मुक्त करने के लिए व्यक्ति की चिन्तन-पद्धति को समाज सापेक्ष बनाने का प्रयत्न करना चाहिए । हिंसा का अंत करने के लिए आसमान से फ़रिश्ते नहीं आएँगे, उसका अंत इस धरती पर रहने वाले मनुष्य ही करेंगे । शर्त यह है कि वह सच्चे अर्थों में मनुष्य हो । वह ऐसा व्यक्ति हो जो स्वार्थी न होकर संयमशील, संवेदनशील एवं सेवाभावी हो । हमें सुधार अपने परिवार से शुरू करना होगा । बालकों के मन देश-प्रेम, समाज-सेवा तथा उत्तमविचारों का बीजारोपण करना होगा तभी स्वस्थ, सशक्त और हिंसा मुक्त समाज तैयार होगा ।

प्रश्न- {15} 'यात्राएँ हमें 'स्व' की संकीर्णता से मुक्त करती हैं तथा हमें एक-दूसरे से जुड़ना सिखाती हैं । यह कथन कहाँ तक सत्य है ? अपने विचार प्रकट कीजिए ।

उत्तर : उपरोक्त कथन अक्षरशः सत्य है । यात्राओं से मनोरंजन, ज्ञानवर्धन एवं अज्ञात स्थलों की जानकारी के साथ-साथ भाषा और संस्कृति का आदान-प्रदान भी होता है । यात्रा के दौरान अनेक धर्म एवं संप्रदाय के लोगों से संपर्क होता है । फलस्वरूप उनसे बहुत कुछ जानने समझने को मिलता है । संस्कृतियों के आदान-प्रदान से सहृदयता, भाईचारा, आपसी प्रेम तथा

संवेदनशीलता का विकास होता है । हम हमेशा सोचते हैं कि जिस संस्कृति, जिस परिवेश में हम रह रहे हैं वह सबसे अच्छा है । परन्तु यात्राओं के अनुभव से हमारी यह ‘स्व’ की भावना मिटती है क्योंकि यात्रा में हमें अपने से अच्छी तथा बुरी दोनों संस्कृतियाँ देखने को मिलती हैं ।

************** 07/11/2023 **Prepared** by: सुशील शर्मा *******************